14

''तीन छोटे शब्द''

(3:24ख-26)

1930 में बर्ट कामर और हैरी रूबी ने ''थ्री लिटल वर्ड्स'' नामक एक गीत लिखा।[1] उस गीत का आरम्भ इस प्रकार होता है:

थ्री लिटल वर्ड्स
ओह, व्हट आई'ड गिव फॉर
दैट वंडरफुल फ्रेज़।
टू हियर दोज़ थ्री लिटल वर्ड्स,
दैट'स ऑल आई'ड लिव फॉर
द रेस्ट ऑफ़ माई डेयज़।

वे ''तीन छोटे शब्द'' थे ''आई लव यू।'' हम इस समय रोमियों 3:21-26 का अध्ययन कर रहे हैं। इन आयतों में हमें ''तीन छोटे शब्दों'' के रूप मिलते हैं, जो कहते हैं कि गॉड लव्स यू यानी *परमेश्वर* आपसे प्रेम करता है।

ये ''तीन छोटे शब्द'' अदालत, गुलामों की मण्डी और वेदी से लिए गए रूपक हैं। इनमें से दो शब्द मसीही शब्दावली का भाग इतने लम्बे समय से हैं कि उन्हें हम अलंकार नहीं मानते: ''धर्मी ठहराया जाना'' और ''छुटकारा।'' तीसरा शब्द इतना प्रचलित नहीं है: ''प्रायश्चित।'' नहीं, ईमानदारी से मानें कि तीसरा शब्द बिल्कुल प्रचलित नहीं है। तौ भी यह अत्यधिक महत्वपूर्ण है।

पिछले पाठ में हमने ''धर्मी ठहराया जाना'' शब्द पर बात की थी। इस पाठ में हम 26 आयत तक वचन में से देखते हुए ''छुटकारा'' और ''प्रायश्चित'' शब्दों का अध्ययन करेंगे।

धार्मिकता की चर्चा (3:24ख, 25क)

पहले हमने देखा था कि ''परमेश्वर की वह धार्मिकता प्रकट हुई [बताई गई] है, जिसकी गवाही व्यवस्था और भविष्यवक्ता देते हैं'' (3:21)। ''धार्मिकता'' लोगों को अधर्मी होने के बावजूद धर्मी गिनने की परमेश्वर की योजना है। ''यीशु मसीह पर विश्वास करने से'' (3:22क) हम इस धार्मिकता को पाते हैं। सब को इस धार्मिकता की आवश्यकता है: ''क्योंकि कुछ भेद नहीं। इसलिए कि सब ने पाप किया है और परमेश्वर की महिमा से रहित हैं'' (3:22ख, 23)। जो लोग परमेश्वर की धार्मिकता को मानते हैं, वे ''उसके अनुग्रह से उस छुटकारे के द्वारा जो मसीह यीशु में है, सेंत मेंत धर्मी ठहराए जाते [परमेश्वर द्वारा 'दोषी नहीं' ठहराए जाते] हैं'' (3:24)।

छुटकारा

यह हमें अपने ''तीन छोटे शब्दों'' में से दूसरे अर्थात ''छुटकारा'' पर ले आता है। हम अनुग्रह से ''उस *छुटकारे* के द्वारा, जो मसीह यीशु में है, धर्मी ठहराए जाते हैं'' (आयत 24ख)।

अनुवादित शब्द ''छुटकारा'' (*apolutrosis*) मसीह की मृत्यु के महत्व का वर्णन करने के लिए इस्तेमाल किए जाने वाले शब्द ''छुड़ौती'' (*lutrosis*) के लिए शब्द का मजबूत रूप है (मत्ती 20:28; 1 तीमुथियुस 2:6)। *अपोलुट्रोसिस* ''का इस्तेमाल किसी कैदी को उसके पकड़ने वाले से स्वतन्त्र कराने के लिए छुड़ौती के रूप में दी गई राशि या मालिक से गुलाम को छुड़ाने के लिए दी गई कीमत के लिए किया जाता था।''[2] रोमियों 3:9 में पौलुस ने पाप को क्रूर स्वामी के रूप में दिखाया, जब उसने लिखा कि ''यहूदी और यूनानी दोनों सब के सब पाप के वश [अधिकार और काबू] में हैं।'' मनुष्यजाति को इस क्रूर से कैसे छुड़ाया जा सकता था? मसीह को हमारी ''छुड़ौती'' देनी पड़नी थी।

हम में से कइयों को समाचार पत्र की सुर्खियों में छुड़ौती की बातें ध्यान में होंगी।[3] 1932 में एक प्रसिद्ध नाविक चार्ल्स लिंडबर्ग और उसकी पत्नी ने अपने अपहृत लड़के को बचाने के प्रयास में 50, 000 डॉलर की राशि दी। 1963 में गायक/अभिनेता फ्रैंक सिनेटरा ने अपने पुत्र फ्रैंक जूनियर को वापस लाने के लिए 2, 40, 000 डॉलर चुकाए। ये सब छुड़ौतियां यीशु द्वारा चुकाई जाने वाली कीमत के सामने फीकी हैं। आयत 25 में आगे बढ़ते हुए हम देखते हैं कि छुड़ौती का दाम क्रूस पर बहाया यीशु का *लहू* था।

आयत 25 में हम इस पत्र में पहली बार पाएंगे कि धर्मी ठहराया जाना यीशु के लहू से जुड़ा है, परन्तु यह अन्तिम बार नहीं होगा। 5:9 में पौलुस ने कहा कि ''हम अब उसके लहू के कारण धर्मी ठहरे।'' पतरस ने भी इस बात की पुष्टि की कि ''... तुम्हारा छुटकारा चान्दी-सोने अर्थात नाशवान वस्तुओं के द्वारा नहीं हुआ, पर निर्दोष और निष्कलंक मेमने अर्थात मसीह के बहुमूल्य लोहू के द्वारा हुआ'' (1 पतरस 1:18, 19)। पाप *में* जाने के कई रास्ते हैं, परन्तु इस *में से* निकलने का एक ही रास्ता है, यीशु मसीह के लहू के द्वारा। इब्रानियों की पुस्तक के लेखक ने लिखा है, ''बिना लोहू बहाए क्षमा नहीं होती'' (इब्रानियों 9:22)। आर.सी. बेल ने लिखा है, ''छुटकारे में गाढ़ा रंग लहू का [लाल] है।''[4]

कई लोगों को ''खूनी धर्म'' (जैसा कि वे इसे कहते हैं) के विचार से ठोकर लगती है। उन्हें कलीसिया की गीतों की पुस्तकों में से ''लहू'' शब्द निकाल देना अच्छा लगता है, जिस कारण वे ''लहू में धोए गए'' जैसे पुराने महान भजनों का मज़ाक उड़ाते हैं। स्पष्टतया वे यह समझने में नाकाम रहते हैं कि ''यीशु के लहू'' का इस्तेमाल यीशु की मृत्यु के लिए लाक्षणिक रूप में किया जाता है[5] जिसमें यीशु ने हमारे पापों का दोष अपने ऊपर ले लिया। ''लहू,'' ''क्रूस,'' ''क्रूस दिया जाना,'' ''कष्ट'' और ''मत्यु'' सभी शब्द यीशु पर लागू करने पर छुटकारे के उसी कार्य का अर्थ देते हैं।

लहू के द्वारा यह छुटकारा ''मसीह यीशु *में*'' है (आयत 24ख)। ''मसीह में'' पौलुस के पसन्दीदा वाक्यांशों में से एक था। (उसने इसका इस्तेमाल 169 बार किया![6]) इसका अर्थ मसीही व्यक्ति का अपने प्रभु के साथ निकट, गूढ़ सम्बन्ध है। रोमियों 6:3 में हम पढ़ेंगे कि हमें ''मसीह यीशु में बपतिस्मा दिया गया'' है।

''छुटकारा'' शब्द की चर्चा को छोड़कर आगे बढ़ने से पहले मैं यह बताना आवश्यक

समझता हूं कि कई साल पहले विद्वान लोग इस प्रश्न पर बहस करते थे कि ''छुड़ौती की कीमत किसे दी गई?'' आमतौर पर अलंकार की भाषा का इस्तेमाल एक बात को स्पष्ट करने के लिए किया जाता है न कि कई बातों को। उदाहरण के लिए यीशु ''द्वार'' है (यूहन्ना 10:9), परन्तु इसका अर्थ यह नहीं है कि उसे कब्ज़े लगे हुए हैं। ''छुड़ौती किसे दी गई?'' पूछने का अर्थ अलंकार को बहुत दूर तक दबाना है। जब हम यह कहते हैं कि किसी धावक ने ''टीम की भलाई के लिए बलिदान किया'' तो हम यह नहीं पूछ रहे होते हैं कि ''उसने अपने आपको किस देवता के सामने बलिदान दिया?'' छुड़ौती के रूपक का अर्थ यह है कि आप और मैं पाप में फंसे हुए थे, जिसमें से अपने आप निकलने का कोई रास्ता नहीं था और हमारी स्वतन्त्रता को बचाने के लिए यीशु को *मरना* पड़ा!

प्रायश्चित

आयत 24 की समाप्ति ''मसीह यीशु'' शब्दों से होती है। पौलुस अभी भी यीशु की बात कर रहा था, जब उसने कहा, ''उसे परमेश्वर ने ठहराया''[7] (आयत 25क)।

> क्रूस पर चढ़ाया जाना परमेश्वर के प्रेम का सार्वजनिक प्रदर्शन था। यीशु के समय के ''रहस्यमय सम्प्रदाय'' गुमनामी और रहस्य पर निर्भर थे, परन्तु सुसमाचार ''किसी कोने में नहीं'' बताया गया था (प्रेरितों 26:26)। मसीह ने सार्वजनिक सेवकाई की (लूका 2:31); उसका क्रूस पर चढ़ाया जाना एक आधिकारिक और सार्वजनिक कार्य था; और सुसमाचार का प्रसार सार्वजनिक घोषणा से हुआ था।[8]

यह हमें एक अपरिचित शब्द पर ले आया है, जो हमारी सोच को चुनौती देता है, जो उस बात की तह तक जाता है कि परमेश्वर दुष्टों को धर्मी कैसे ठहरा सकता है और यह शब्द ''प्रायश्चित'' है। मसीह की बात करते हुए, पौलुस ने कहा, ''उसे परमेश्वर ने उसके लोहू के कारण एक ऐसा *प्रायश्चित* ठहराया'' (आयत 25क)। NASB में ''प्रायश्चित'' शब्द इन चकित करने वाले वचनों में मिलता है।[9]

> ... उसको चाहिए था, कि सब बातों में अपने भाइयों के समान बने; जिससे वह उन बातों में जो परमेश्वर से सम्बन्ध रखती हैं, एक दयालु और विश्वास योग्य महायाजक बने ताकि लोगों के पापों के लिए *प्रायश्चित* करे (इब्रानियों 2:17)।
>
> ... वही हमारे पापों का *प्रायश्चित* है: और केवल हमारे ही नहीं, वरन सारे जगत के पापों का भी (1 यूहन्ना 2:2)।
>
> प्रेम इस में नहीं, कि हम ने परमेश्वर से प्रेम किया; पर इसमें है, कि उसने हमसे प्रेम किया; और हमारे पापों के प्रायश्चित्त के लिए अपने पुत्र को भेजा (1 यूहन्ना 4:10)।

''प्रायश्चित'' कई धार्मिक क्षेत्रों में प्रसिद्ध शब्द नहीं है। कुछ लोगों द्वारा इसे अपनी धार्मिक शब्दावली में से निकाल देने की इच्छा का एक कारण यह है कि आम आदमी इससे परिचित नहीं

है।[10] मैं इस बात से सहमत हूं कि जो लोग बाइबल की शब्दावली से अनजान हैं, उनके साथ बात करने के लिए स्पष्ट शब्दों का इस्तेमाल होना आवश्यक है। अपने संदेश को जान-बूझकर अस्पष्ट बनाना व्यर्थ है, परन्तु कई धर्मशास्त्रीय शब्द अर्थ के साथ इतने अर्थपूर्ण हैं कि हम उन्हें फैंक नहीं सकते। ''प्रायश्चित'' भी ऐसा ही एक शब्द है।

''प्रायश्चित'' के अप्रसिद्ध होने का दूसरा कारण यह है कि अधिकतर लोग इसके अर्थ परमेश्वर का *क्रोध* शान्त करने की आवश्यकता से परेशान हो जाते हैं। इसके लिए अंग्रेज़ी शब्द ''propitiation'' की परिभाषा ''तुष्ट करने वाली वस्तु [विशेषकर] किसी देवता को मनाने के लिए भेंट'' के रूप में की जाती है।[11] यूनानी शब्द (*hilasterion*) के अनुवाद ''प्रायश्चित'' का इस्तेमाल मूर्तिपूजकों द्वारा ''सामुदायिक कार्यों'' जैसे बलिदानों आदि के लिए किया जाता था, जो ''देवताओं को प्रसन्न करने के उद्देश्य से (जिनका क्रोध कई बार भड़क उठता है) दिया जाता था।''[12] टीकाकार और अनुवादक यह विरोध करते हैं कि सच्चे परमेश्वर को मूर्तिपूजकों के झूठे देवताओं से नहीं मिलाया जा सकता (और न मिलाया जाना चाहिए)।

वे ध्यान दिलाते हैं कि पुराने नियम का यूनानी अनुवाद (सप्तति, या LXX) ''प्रायश्चित का ढकना'' (वाचा के सन्दूक के ढक्कन) के सम्बन्ध में बार-बार *hilasterion* का इस्तेमाल करता है और इब्रानियों 9:5 में *hilasterion* का स्पष्ट अर्थ प्रायश्चित का ढकना है। प्रायश्चित का ढकना वह स्थान था, जहां महायाजक वर्ष में एक बार, प्रायश्चित के दिन लोगों के पापों के प्रायश्चित के लिए पशुओं का लहू छिड़कता था (देखें इब्रानियों 9:7; लैव्यव्यवस्था 16:14-16)। आपत्ति करने वाले इस पर ज़ोर देते हैं कि ''प्रायश्चित'' (या ऐसा कुछ) *hilasterion* का बेहतर अनुवाद होगा (देखें NIV)।

यह प्रश्न कि *hilasterion* का सम्बन्ध प्रायश्चित के ढकने से है या नहीं[13] थोड़ा अप्रासंगिक लगता है, क्योंकि डग्लस जे. मू ने ध्यान दिलाया है कि ''पुराने नियम को निष्पक्ष रूप से पढ़ने पर पापों की क्षमा (प्रायश्चित करना) और परमेश्वर के क्रोध का मुड़ना (प्रायश्चित) दोनों में प्रायश्चित के दिन का संस्कार था।''[14] एफ.एफ ब्रूस ने टिप्पणी की है:

> ... यदि संदर्भ मांग करता है, तो ईश्वरीय क्रोध को हटाने के *hilastērion* के अर्थ से निकालने का कोई कारण नहीं है और रोमियों 3:25 में संदर्भ *hilastērion* के अर्थ में ईश्वरीय क्रोध को हटाने की मांग करता है। पौलुस ने 1:18 में पहले ही कहा था कि ''परमेश्वर का क्रोध (NEB 'ईश्वरीय प्रतिफल') तो उन लोगों की सब अभक्ति और अधर्म पर स्वर्ग से प्रकट होता है''; तो फिर ''क्रोध'' को हटाया कैसे जा सकता है? परमेश्वर द्वारा मसीह में *hilastērion* दिया गया न केवल अभक्ति और अधर्म [के दोष] को हटाता है, बल्कि यह नैतिक संसार में से ऐसे व्यवहारों और कार्यों से मिलने वाले स्पष्ट प्रतिफल को भी हटाता है।[15]

उस आपत्ति का क्या कि ''प्रायश्चित'' शब्द परमेश्वर को मूर्तियों के देवताओं के समान बना देता है? जॉन स्टॉट ने यह ध्यान दिलाया कि ''प्रायश्चित के लिए मूर्तियों की पूजा करने वाले और मसीही व्यक्ति में पाई जाने वाली भिन्नताओं को बढ़ा-चढ़ाकर कहना कठिन होगा।''[16]

- मूर्तिपूजकों के प्रायश्चित के प्रयास इसलिए किए जाते थे क्योंकि उनके देवता ''बदमिज़ाज, मनमौजी और मौजी होते'' थे। मसीही विचार यह है कि ''परमेश्वर का पवित्र क्रोध बुराई पर पड़ता है। परमेश्वर के क्रोध के बारे में कुछ भी असैद्धांतिक, मनमौजी होना या अनियन्त्रित होने जैसी कोई बात नहीं है यानी इसे केवल बुराई से ही भड़काया जा सकता है।''
- मूर्तियों की पूजा करने वालों में अपने देवताओं को प्रसन्न करने के लिए *मानवीय* प्रयास आवश्यक था। मसीही लोग इस बात को समझते हैं कि पापी व्यक्ति परमेश्वर के क्रोध को शान्त नहीं कर सकते। पहल *परमेश्वर* को ही करनी पड़नी थी।
- मूर्तियों के बलिदानों में फल, पशुओं और (कई बार) नर बलियों की भेंटें होती थीं, जिनसे उनके देवता संतुष्ट हो भी सकते थे और नहीं भी। परमेश्वर द्वारा अपना *पुत्र* बलिदान करना हमारे प्रायश्चित का वह ढंग है, जो बिना किसी संदेह के उसके क्रोध को शान्त करता है![17]

एक अन्तिम विरोध पर विचार किया जा सकता है। कोई कह सकता है, ''*अपने आप* को प्रसन्न करने के लिए परमेश्वर को बलिदान देने की बात सोचना बेतुका है।'' मैं इतना ही कहूंगा कि पापी मनुष्य के विरुद्ध परमेश्वर का क्रोध (1:18) शान्त किया जाना *था,* या फिर उद्धार की कोई आशा नहीं थी। परन्तु पापी पुरुषों और स्त्रियों के पास परमेश्वर के क्रोध को शान्त करने के लिए चढ़ाने को कुछ नहीं है (3:10, 23)। इस स्थिति में यदि स्वयं परमेश्वर न करता तो कौन बलिदान कर सकता है?

बलिदान क्या था? आयत 25 जारी रहती है: ''उसे [मसीह की बात करते हुए] परमेश्वर ने *उसके लोहू के कारण* एक ऐसा प्रायश्चित ठहराया।''[18] यीशु को क्रूस पर अपना लहू बहाना आवश्यक था।

हम बाइबल की प्रायश्चित की शिक्षा को संक्षिप्त कैसे कर सकते हैं? परमेश्वर तो पवित्र परमेश्वर है (लैव्यव्यवस्था 11:44); पवित्र परमेश्वर के रूप में वह पक्षपात का पाप नहीं कर सकता। परमेश्वर धर्मी परमेश्वर है; ''न्यायी परमेश्वर'' के रूप में (यशायाह 30:18) उसके लिए पाप और अवज्ञा को दण्ड देना *आवश्यक* है। पवित्रता और न्याय का परमेश्वर होने के रूप में उसे पापी मनुष्यजाति को सनातन नरक में भेजने का हर अधिकार है। न्याय दिखाया जाना *आवश्यक* है; पाप को दण्ड मिलना *आवश्यक* है; बुराई के विरुद्ध परमेश्वर का क्रोध *आवश्यक* है। इसके साथ ही परमेश्वर प्रेम करने वाला परमेश्वर है (1 यूहन्ना 4:16); और प्रेम करने वाला परमेश्वर होने के कारण वह नहीं चाहता कि किसी का नाश हो (2 पतरस 3:9)। इस असम्भव लगने वाली दुविधा का परमेश्वर के पास क्या हल था। उसने हमारे पापों को दण्ड देने के लिए अपने ही पुत्र को भेज दिया।

> हम तो सब के सब भेड़ों की नाईं भटक गए थे; हम में से हर एक ने अपना-अपना मार्ग लिया; और यहोवा [परमेश्वर] ने हम सभों के अधर्म का बोझ उसी [यीशु] पर लाद दिया (यशायाह 53:6)।

... पवित्र शास्त्र के वचन के अनुसार यीशु मसीह हमारे पापों के लिए मर गया (1 कुरिन्थियों 15:3)।

''अपने लहू के कारण'' वाक्यांश में इस समाधान का संकेत है। अध्याय 5 में इसे विस्तार दिया गया है:

> क्योंकि जब हम निर्बल ही थे, तो मसीह ठीक समय पर भक्तिहीनों के लिए मरा। किसी धर्मी जन के लिए कोई मरे, यह तो दुर्लभ है, परन्तु क्या जाने किसी भले मनुष्य के लिए कोई मरने का भी हियाव करे। परन्तु परमेश्वर हम पर अपने प्रेम की भलाई इस रीति से प्रगट करता है, कि जब हम पापी ही थे तभी मसीह हमारे लिए मरा। सो जब कि हम, अब उसके लोहू के कारण धर्मी ठहरे, तो उसके द्वारा क्रोध से क्यों न बचेंगे? (आयतें 6-9)।

फिर अध्याय 8 में पौलुस ने दावा किया कि परमेश्वर ''ने अपने निज पुत्र को भी न रख छोड़ा'' (आयत 32)।

वर्षों से प्रचारकों को यह समझाना कठिन लगता है कि परमेश्वर ने किस प्रकार एक ही समय में अपने न्याय और अपने प्रेम को व्यक्त किया।[19] एक मज़बूत, बुद्धिमान प्रमुख की कहानी बताई जाती है:

> उसने अपनी श्रेष्ठ शारीरिक शक्ति के कारण ही नहीं, बल्कि अपनी अत्यधिक निष्कपटता और निष्पक्षता के कारण राज किया। जब जल्दी-जल्दी चोरियां हुईं तो उसने घोषणा की कि यदि कोई चोर पकड़ा गया तो उसे कबीले के चाबुक मारने वाले से दस चाबुक पड़ेंगे। चोरियां बढ़ने पर [प्रधान ने] चाबुकों की गिनती बढ़ाकार चालीस कर दी, जो ऐसा दण्ड था कि सबको मालूम था कि केवल एक ही मजबूत आदमी है जो सह सकता है। वे दंग रह गए कि चोर प्रधान की बुजुर्ग माता है और तुरन्त यह अनुमान लगने लगे कि उसे घोषित दण्ड दिया जाएगा या नहीं। क्या वह उसे क्षमा कर अपने प्रेम को संतुष्ट करेगा या उसे वह दण्ड देकर जिससे उसकी मृत्यु हो सकती थी, अपने नियम पर खरा उतरेगा? अपनी निष्ठा के पक्के प्रधान ने अपनी माता को चालीस चाबुकों का दण्ड दे दिया, परन्तु अपनी माता के प्रति अपने प्रेम पर खरा उतरते हुए चाबुक के बिल्कुल सामने उसने अपने शरीर को करते हुए अपनी पीठ आगे करके अपनी माता को सुनाया गया दण्ड अपने ऊपर ले लिया।[20]

बेशक, जो कुछ परमेश्वर ने हमारे लिए किया है, उसे व्यक्त करने के लिए कोई भी उदाहरण काफी नहीं है। हमें ''प्रायश्चित'' शब्द से मिलने वाले ज्ञान से ही संतुष्ट होना पड़ेगा कि यीशु के बलिदान ने परमेश्वर के क्रोध को शान्त *कर दिया* और इस प्रकार हमारा उद्धार सम्भव बनाया।

हम इस अद्‌भुत उपहार को कैसे ग्रहण करते हैं। एक बार फिर पौलुस ने ज़ोर दिया कि हम इसे ''विश्वास करने से'' ग्रहण करते हैं: ''उसे परमेश्वर ने उसके लोहू के कारण एक ऐसा

प्रायश्चित ठहराया, *जो विश्वास करने से* कार्यकारी होता है, ...'' (रोमियों 3:25)।

धार्मिकता का बचाव किया गया (3:25ख, ग, 26)

आयत 25 के अन्तिम भाग में और आयत 26 में हम इस विरोधाभास में वापस आते हैं कि धर्मी परमेश्वर (पवित्र परमेश्वर) अधर्मी (अधर्मी लोगों) को ''धर्मी'' घोषित कैसे कर सकता है। यूनानी बाइबल में आयत 21 में आरम्भ होने वाला वाक्य आयत 26 तक जारी रहता है, परन्तु NASB के अनुवादकों ने आयत 25 के बीच में ''विश्वास के द्वारा'' के बाद विराम लगा दिया। उन्होंने दो शब्द (''This was'') डाल दिए और फिर बाइबल में वापस ''अपनी धार्मिकता दिखाने के लिए'' (आयत 25ख) में आ गए। याद रखें कि वाक्य वास्तव में जारी रहता है: मसीह परमेश्वर के क्रोध को शान्त करने और इसके साथ ही परमेश्वर की धार्मिकता को दिखाते हुए ''सरेआम प्रायश्चित के रूप में दिखाया गया'' था।

धार्मिकता दिखाई गई

इस वचन में परमेश्वर की ''धार्मिकता'' का अर्थ उसका धर्मी स्वभाव है। ''प्रगट करे'' शब्द एक मिश्रित शब्द *endeixis* से लिया गया है, जिसका अर्थ ''दिखाना ... ,'' ''प्रमाण'' है।[21] ऐसी सार्वजनिक घोषणा किसी भी व्यक्ति के लिए लाभदायक थी, जिसने परमेश्वर को परीक्षा में डालने का दुस्साहस किया हो (देखें 3:4ख)।

ऐसा प्रदर्शन क्यों आवश्यक था? पौलुस ने लिखा, ''कि जो पाप पहिले किए गए और जिनकी परमेश्वर ने अपनी सहनशीलता से[22] आनाकानी की [थी]'' (आयत 25ग)। ''जो पाप पहले किए गए'' पुराने नियम के युग के दौरान किए गए पापों को कहा गया है।[23] ध्यान दें कि यह आयत यह नहीं कहती कि उन पापों को *क्षमा कर दिया* था (जैसा कि KJV से संकेत मिलता है), बल्कि वचन कहता है कि वह उनके ''ऊपर से गुजर गया'' था (प्रेरितों 17:30 से तुलना करें)। CJB में इस वचन को ऐसे लिखा गया है, ''वह लोगों के कालांतर में किए हुए पापों के ऊपर से होकर गुजर गया था [न कोई दण्ड और न कोई क्षमा देकर]।''

पौलुस ने इस बात को साबित कर दिया था कि ''*सबने* पाप किया है'' और यह कि *सब* ''परमेश्वर की महिमा से रहित हैं'' (3:23)। इसमें आवश्यक तौर पर पुराने नियम के अन्य महारथियों के साथ-साथ अब्राहम और दाऊद भी थे (देखें अध्याय 4)। पुराने नियम में बार-बार परमेश्वर इस्राएल के न्यायियों से कहता था कि वे धर्मी का न्याय करें और दुष्ट को दण्ड दें (देखें व्यवस्थाविवरण 25:1); वह उन्हें इसके विपरीत करने पर डांटता था (देखें नीतिवचन 17:15; यशायाह 5:23)। अपने ही न्याय के सम्बन्ध में उसने कहा, ''मैं दुष्ट को निर्दोष *न* ठहराऊंगा'' (निर्गमन 23:7)। ऐसा है तो वह अब्राहम, दाऊद और अन्यों के पापों को अनदेखा कैसे कर सकता है? रोमियों के अगले अध्याय की शब्दावली का इस्तेमाल करें तो धर्मी परमेश्वर को ''भक्तिहीन को धर्मी ठहराने वाला'' कैसे कहा जा सकता है (4:5)?

उत्तर यह है कि पुराने नियम के समयों में परमेश्वर उस पर भरोसा करने वालों द्वारा ''किए गए पापों'' को नज़रअंदाज़ *नहीं* कर रहा था, बल्कि वह यह पूर्वानुमान लगा रहा था कि एक दिन उसका पुत्र पापों के लिए ''प्रायश्चित के रूप में'' अपना लहू दे देगा, जिसमें यीशु के जन्म से

पहले के विश्वासियों के साथ-साथ उसकी मृत्यु के बाद होने वाले लोगों के पाप भी थे। पुराना नियम क्षमा के बारे में बात करता है (उदाहरण के लिए देखें निर्गमन 34:7; लैव्यव्यवस्था 4:20, 26, 31, 35); परन्तु यह क्रूस पर यीशु की मृत्यु पर निर्भर अंतरिम क्षमा थी। इब्रानियों की पुस्तक के लेखक ने लिखा है कि ''उस मृत्यु [यीशु की मृत्यु] के द्वारा जो *पहली वाचा* [पुराने नियम] *के समय के अपराधों से* छुटकारा पाने के लिए हुई है'' (इब्रानियों 9:15)। यह सच्चाई कई बार इस प्रकार व्यक्त की जाती है: ''जब क्रूस पर यीशु की मृत्यु हुई तो उसका लहू केवल *आगे को* (क्रूस के बाद के लोगों के लिए) ही नहीं, बल्कि *पीछे को* (उनके लिए जो इससे पहले हुए हैं) भी बहा।''

हम यह समझाने की कोशिश कर सकते हैं कि पुराने नियम के समयों में परमेश्वर पाप के साथ अलग-अलग तरह से कैसे व्यवहार करता था। उदाहरण के लिए मैं एक अवसर की तुलना का सुझाव दे सकता हूं, जब मेरा परिवार और मैं एक रेस्टोरेंट में खाना खा रहे थे। मैंने अपना बिल पूछा तो वेटर ने कमरे के दूसरी ओर बैठे हमारे मित्रों की ओर इशारा करते हुए कहा, ''बिल चुका दिया गया है।'' वास्तव में बिल नहीं ''चुकाया जाना'' था, जब तक *बाद में* (मेरे मित्र ने अपना और मेरा बिल नहीं चुकाया); परन्तु वेटर को विश्वास था कि बिल चुका दिया *जाएगा,* सो उसने इसे ''चुका दिया गया बिल'' मान लिया।

शायद इसकी और सही व्याख्या यह ज़ोर देना होगी कि परमेश्वर समय अर्थात कालक्रम की घटनाओं को वैसे ही नहीं देखता, जैसे हम देखते हैं (देखें 2 पतरस 3:8)। परमेश्वर के दृष्टिकोण से, सृष्टि के बनाए जाने से भी पहले उसके पुत्र का क्रूस पर चढ़ाया जाना एक पूर्ण हुई घटना थी (देखें उत्पत्ति 3:15; इफिसियों 3:11)। इस पर हम और विस्तार से तब चर्चा करेंगे जब रोमियों 8 पर पहुंचेंगे और परमेश्वर के पूर्व ज्ञान की अवधारणा को समझने की कोशिश करेंगे। डी. स्टुअर्ट ब्रिस्को ने कालक्रम पर परमेश्वर के परिप्रेक्ष्य का विवरण इस प्रकार दिया है:

> ... वस्तुओं, घटनाओं को देखने का परमेश्वर का ढंग क्रम में वैसे नहीं होता जैसे वे समय में घटती हैं, बल्कि वे सर्वदा-वर्तमान की स्थिति में होती हैं क्योंकि वे अनादिकाल में होती हैं। ... मसीह का क्रूस, चाहे समय और स्थान की घटना है, पर इससे भी महत्वपूर्ण यह एक सनातन घटना है, जो सर्वदा प्रासंगिक और पर्याप्त है।[24]

निश्चय ही यीशु केवल उनके लिए नहीं मरा जो क्रूस से *पहले* रहते थे; वह उनके लिए भी मरा जो उसकी मृत्यु के *बाद* रहे हैं। इसी कारण पौलुस ने आगे कहा, ''वरन इसी समय उस [परमेश्वर] की धार्मिकता प्रकट हो; कि जिस से वह आप ही धर्मी ठहरे'' (आयत 26क)। हमें कितने आभारी होना चाहिए कि लहू *आज भी* ''इसी समय में'' पाप शुद्ध करता है!

धार्मिकता की परिभाषा

यह हमें संक्षिप्त कथन ''कि जिस से वह [परमेश्वर] आप ही धर्मी ठहरे, और धर्मी ठहराने वाला हो'' (आयत 26ख) तक ले आता है। जॉन बेंगल ने कहा है कि हमें इन शब्दों में सुसमाचार का ''सबसे बड़ा विरोधाभास'' मिलता है।[25] परमेश्वर ''धर्मी'' (पाप को दण्ड देना) और ''धर्मी ठहराने वाला'' (पापियों को बचाने वाला) कैसे हो सकता है? जैसा कि हमने देखा है, क्रूस से

यह सम्भव होता है। जेम्स आर. एडवर्ड्स ने लिखा है, ''मसीह के क्रूस ने पर्याप्त रूप से परमेश्वर के न्याय और प्रेम दोनों को दिखाया और किसी से समझौता नहीं किया।''[26] जॉन मैकार्थर ने निष्कर्ष निकाला, ''[परमेश्वर के] न्याय के कारण कोई पाप बिना दण्ड पाए कभी नहीं रहेगा; तौ भी उसके अनुग्रह के कारण, कोई पाप क्षमा से दूर नहीं है।''[27]

कितनी अद्‌भुत सच्चाई है कि यीशु अपने ऊपर पाप का दण्ड लेने के लिए मर गया! यह हमें इस प्रश्न में डाल देता है कि यदि यीशु सब लोगों के लिए मरा (और वह मरा भी; देखें रोमियों 6:10; 1 पतरस 3:18) तो फिर सभी का उद्धार क्यों नहीं होता? क्योंकि उद्धार का दान स्वीकार भी किया जा सकता है और उसे नकारा भी जा सकता है। इस पाठ के लिए हमारा वचन पाठ इस सच्चाई के साथ समाप्त होता है कि परमेश्वर ''जो *यीशु पर विश्वास* करे उसका धर्मी ठहराने वाला'' है (रोमियों 3:26ग)।

मैं फिर इस बात पर ज़ोर देता हूं कि उद्धार दिलाने वाला विश्वास केवल मानसिक अनुमति नहीं और न ही मुर्दा विश्वास है (देखें याकूब 2:26); बल्कि यह जीवित, सक्रिय, आज्ञाकारी विश्वास है (देखें रोमियों 1:5; 16:26)। मैकार्थर के इस कथन पर विचार करें:

> यीशु मसीह में उद्धार दिलाने वाला विश्वास कि नया नियम उसके बारे में बताई गई सच्चाइयों की सरल पुष्टि से कहीं बढ़कर है। यहां तक कि दुष्ट आत्माओं ने भी उसके विषय में कई बातों को स्वीकार किया [देखें मरकुस 5:7; प्रेरितों 16:17] ... उद्धार दिलाने वाला विश्वास अपने आप को प्रभु यीशु मसीह के पूर्णतया अधीन करना है।...[28]

इसके साथ ही मैं फिर इस बात को रेखांकित करूंगा कि यह विश्वास सर्वप्रथम और सबसे बढ़कर *विश्वास* है। कई ऐसी बातें हो सकती हैं, जो मैं नहीं कर सकता, परन्तु मैं विश्वास कर *सकता* हूं, और आप भी कर सकते हैं। इसका अर्थ यह है कि परमेश्वर की ओर से छुटकारा सब के लिए उपलब्ध कराया गया है!

सारांश

पौलुस परमेश्वर की योजना में विश्वास के महत्व की बात करने ही वाला था (रोमियों 4), परन्तु पहले उसने फिर से यहूदी आपत्तियों का पूर्वानुमान लगाया (रोमियों 3:27-31)। अध्याय 3 की अन्तिम आयतें हम अगले पाठ में देखेंगे।

यह और पिछला पाठ मनुष्य जाति के उद्धार के लिए परमेश्वर की योजना के ''तीन छोटे शब्द'' अर्थात ''धार्मिकता,'' ''छुटकारा'' और ''प्रायश्चित'' का केन्द्र है। हमने धर्मशास्त्रीय अवधारणाओं की कुछ कठिन अवधारणओं को विशेषकर प्रायश्चित से जुड़ी बातों पर चर्चा की है। क्या हमारे लिए उद्धार पाने के लिए ऐसे विषयों को पूर्ण रूप से समझना आवश्यक है? उससे अधिक नहीं जितना मुझे यह समझना आवश्यक है कि मुझे सामने के घर का ताला खोलने के लिए क्या करना है। मुझे ताले के अन्दर का पता नहीं है कि वह कैसे काम करता है, परन्तु मैं इतना जानता हूं कि ताले में सही कुंजी लगाने से ताला खुल जाएगा। आपके उद्धार की ''कुंजी'' यह समझना है कि यीशु आपके पापों के लिए मरा और उसमें और उसके बलिदान में भरोसा करना है।

यदि आपने उसे अपना जीवन नहीं दिया है तो मेरी प्रार्थना है कि आप विश्वास के साथ प्रभु को अपना आप दे दें (प्रेरितों 2:36-38, 41, 47)-आज ही!

सिखाने वालों तथा प्रचारकों के लिए नोट्स

''तीन छोटे शब्दों'' पर अपने विचारों को केन्द्रित करते हुए आप पिछले और इस पाठ को मिला सकते हैं।

टिप्पणियां

[1]बर्ट कामर ''श्री लिटल वर्ड्स,'' उ 1930, वार्नर ब्रदर्स; उ 1958, एडविन एच. मौरिस एण्ड कं., MPL कम्युनिकेशंस। [2]जॉन मैकार्थर, *रोमन्स 1-8,* दि मैकार्थर न्यू टैस्टामैंट कमैंट्री (शिकागो: मूडी प्रैस, 1991), 208-9. [3]फ्रिज़ राइडनयोर, सं., *हाऊ टू बी ए क्रिश्चियन विदाउट बीइंग रिलीजियस* (गलेंडेल, कैलिफोर्निया: रीगल बुक्स, जी/एल पब्लिकेशंस, 1967), 27. अपने सुनने वालों की आवश्यकता अनुसार इसे अपना लें। हो सकता है छुड़ौती की मांग के साथ अपहरण की कोई बात आपके क्षेत्र में सुर्खियां बनी हो। [4]आर. सी. बेल, *स्टडीज़ इन रोमन्स* (ऑस्टिन, टैक्सस: फर्म फाउंडेशन पब्लिशिंग हाउस, 1957), 31 में उद्धृत। [6]जॉन ए. मैके, *गॉड'स ऑर्डर: द इफिशियन लैटर एंड दिस प्रेज़ेंट टाइम* (न्यू यार्क: मैक्मिलन कं., 1953), 97. [7]''ठहराया'''' के सामने ठहराना'' के अर्थ वाले (*tithimi* [''ठहराना या रखना''] के साथ [''के सामने रखना'']) एक मिश्रित शब्द (*protithimi*) से लिया गया है। (डब्ल्यू. ई. वाइन, मैरिल एफ. अंगर, और विलियम वाइट, जूनियर, *वाइन'स कम्पलीट एक्सपोज़िटरी डिक्शनरी ऑफ़ ओल्ड एंड न्यू टैस्टामैंट वर्ड्स* [नैशविल्ले: थॉमस नेल्सन पब्लिशर्स, 1985], 564). [8]जेम्स आर. एडवर्ड, *रोमन्स,* न्यू इन्टरनैश्नल बिब्लिकल कमैंट्री (पीबॉडी, मैसाचुएट्स: हैंड्रिक्सन पब्लिशर्स, 1992), 104 से लिया गया। [9]इन वचनों में रोमियों 3:25 में यूनानी शब्द के अनुवाद ''प्रायश्चित'' का वही रूप इस्तेमाल नहीं किया गया है, परन्तु उनमें उसी परिवार के शब्दों का इस्तेमाल है। [10]प्रयास करने के किसी भी क्षेत्र में प्रवेश करने पर कुछ विशेष शर्तों का पता होना आवश्यक है। पढ़ने ... खेती करने ... या कार चलाना सीखने ... या कम्प्यूटर का इस्तेमाल करना सीखने पर विचार करें। यही बात धर्म भी है।

[11]*अमेरिकन हैरीटेज डिक्शनरी,* चौथा संस्क. (2002), s.v. ''propitiation.'' [12]ज्योफ्री डब्ल्यू. ब्रोमिले, *थियोलॉजिकल* डिक्शनरी ऑफ़ द न्यू टैस्टामेंट, संपा. गरहर्ड किट्टल और गरहर्ड फ्रेड्रिक, अनुवाद ज्योफ्री डब्ल्यू. ब्रोमिले (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1985), 364 में एफ़. बुशल, ''*hilastērion.*'' [13]लियोन मौरिस, *दि एपिस्टल टू द रोमन्स* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1988), 181-82; जॉन आर. डब्ल्यू. स्टॉट, *दि मैसेज ऑफ़ रोमन्स: गॉड'स गुड न्यूज़ फॉर द वर्ल्ड,* द बाइबल स्पीक्स टुडे सीरीज़ (डाउनर्स ग्रोव, इलिनोइस: इन्टरवर्सिटी प्रैस, 1994), 113-14 में इस प्रश्न पर चर्चा की गई थी। [14]डग्लस जे. मू, *रोमन्स* दि NIV एप्लीकेशन कमैंट्री (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: ज़ौंडरवन पब्लिशिंग हाउस, 2000), 133. [15]एफ. एफ. ब्रूस, *दि लैटर आफ़ पॉल टू द रोमन्स,* दि टिंडेल न्यू टैस्टामेंट कमैंट्रीज़ (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1985), 100. [16]स्टॉट, 115. [17]यह भाग स्टॉट, 115 से लिया गया है। [18]इस पर कुछ संदेह है कि ''उसके लहू में'' को ''प्रायश्चित'' से पहले रखा जाना चाहिए या ''विश्वास'' से (देखें KJV)। दोनों में से कहीं भी रखने पर वाक्य कहीं और बाइबली शिक्षा से मेल खाता है, इसलिए हमें इसकी चिन्ता नहीं होनी चाहिए। [19]स्पार्टा के एक प्राचीन राजा लिकरगस की कहानी में, उसके पुत्र ने कानून तोड़ा था जिसका दण्ड आंखें निकाला जाना था। राजकुमार की एक आंख निकाल दी गई थी, परन्तु राजा ने कानून के दण्ड से बचाने के लिए अपनी एक आंख दे दी (जेम्स बर्टन कॉफमैन, *कमैंट्री ऑन रोमन्स* [ऑस्टिन, टैक्सस: फर्म फाउंडेशन पब्लिशंग हाउस, 1973], 134). शायद आप कोई और कहानी अच्छी तरह बता सकते हैं, जिससे आपके सुनने वाले परिचित हों। [20]मैकार्थर, 117-118.

[21]*En* (''में'') के साथ *deiknumi* (''दिखाना'')। (वाइन, 153.) [22]यूनानी धर्मशास्त्र में अनुवादित शब्द

''परमेश्वर की सहनशीलता'' आयत 26 के आरम्भ में हैं, परन्तु वे आयत 25 के अन्त को सुधार देते हैं, और जिस कारण NASB के अनुवादकों ने इन शब्दों को आयत 25 में डाल दिया है।[23]कइयों का विचार है कि ''जो पाप पहले किए गए'' मसीही बनने से पूर्व लोगों द्वारा किए गए पापों को कहा गया है। परन्तु इस पद्य में *तब* (मसीह से पूर्व) और *अब* (मसीह के आने के बाद) में अन्तर लगता है।[24]डी. स्टुअर्ट ब्रिस्को, मास्टरिंग द न्यू टैस्टामेंट: *रोमन्स* द कम्युनिकेटर'स कमैंट्री सीरीज़ (डलास: वर्ड पब्लिशिंग, 1982), 94. [25]विलियम बार्कले, *दि लैटर ऑफ़ पॉल टू द रोमन्स,* दि डेली स्टडी बाइबल सीरीज़ (फिलाडेल्फिया: वेस्टमिंस्टर्स प्रैस, 1975), 59. [26]एडवर्ड, 106. [27]मैकार्थर, 218. [28]वही, 205.